सहायक अग्निशमन अधिकारी (A.F.O.)

RAJASTHAN SUBORDINATE AND MINISTERIAL SERVICE SELECTION BOARD (RSMSSB)

राजस्थान का भूगोल

1. सामान्य परिचय
2. सामान्य कृषि
3. राजस्थान में पशुपालन
4. राजस्थान की नदी घाटी एवं सिचाई परियोजनायें
5. राजस्थान में अपवाह तंत्र: नदियां एवं झीलें
6. राजस्थान में खनिज संसाधन
7. राजस्थान में वन एवं वन्य जीव अभ्यारण्य
8. राजस्थान का जलवायु
9. मृदा क्षेत्र विस्तृत भौतिक क्षेत्र
10. मरुस्थलीकरण

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

इतिहास

1. एतिहासिक पर्यटन स्थल
2. राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ
3. साहित्य की प्रमुख कृतियां
4. राजस्थान की प्रमुख चित्र कलाएं
5. राजस्थानी भाषा की प्रमुख शैलियाँ एवं हस्त शिल्प कला
6. राजस्थान के प्रमुख राजवंश एवं उनकी उपलब्धियां
7. राजस्थान के प्रमुख मेले एवं त्यौहार
8. राजस्थान के लोक संगीत एवं लोक नृत्य
9. राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र एवं आभूषण

10. राजस्थान के धार्मिक आन्दोलन

11. लोक देवी एवं लोक देवता

12. राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्त्रोत

13. प्रजामंडल आंदोलन

14. राजस्थान में कृषक एवं जन -जाति आंदोलन

राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

1. राजस्थान में स्थानीय नगरीय स्वशासन
2. राज्य मानवाधिकार आयोग
3. राज्य निर्वाचन आयोग
4. राज्य सूचना आयोग
5. राज्य विधानसभा
6. राज्यपाल
7. मुख्यमंत्री और मंत्रीपरिषद्
8. जिला प्रशासन
9. लोकायुक्त
10. राजस्थान लोक सेवा गारंटी अधिनियम -2011

- **समय सामायिक विषय**

अध्याय –2

राजस्थान में कृषि

प्रिय छात्रों इस अध्याय में हम राजस्थान मे कृषि एवं पशुसंपदा का अध्ययन करेंगे । हम स्थायी तथ्यों के अलावा परिवर्तिनशील वर्तमान आंकड़ों का भी अध्ययन करेंगे । हम कृषि तथा पशु संपदा का वर्तमान अर्थव्यवस्था में महत्व भी जानेंगे तथा इनसे संबंध क्षेत्रों का जो कि हमारी अर्थव्यिवस्था में महत्व रखते हैं उनका भी अध्ययन करेंगे ।

राजस्थान की कृषि

यहां हम कृषि कि विभिन्न पद्धतियों का अध्ययन करेंगे । जो कि निम्न है -

राजस्थान में कृषि पद्धतियों का वर्गीकरण

मिश्रित कृषि

कृषि का वह रूप जिसमें पशुपालन व कृषि साथ साथ कि जाती है । मिश्रित कृषि कहलाती है ।

खडीन कृषि - प्लाया झीलों में पालीवाल ब्राह्मणों के द्वारा की जाने वाली कृषि। प्याला झीलों में 3 तरफ खेत के मिट्टी कि दीवार बनाकर ढलान पर वर्षा का जल एकत्र कर कृषि कि जाती है । (सर्वाधिक - जैसलमेर)

ड्यूओ कल्चर - एक वर्ष में एक खेत में दो फसलों का उत्पादन ।

ओलिगो कल्चर - एक वर्ष में एक खेत में तीन फसलों का उत्पादन ।

रिले कृषि - जब एक कृषि वर्ष में 4 बार फसलों का उत्पादन। (कृषि वर्ष । जुलाई से 30 जून)

स्थानांतरित कृषि - वनो को काटकर या जलाकर की जाने वाली कृषि को स्थानान्तरित कृषि कहा जाता है।

आदिवासियों द्वारा डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़ एवं बाँसवाड़ा क्षेत्र में जंगल में आग लगाकर बची राख फैलाकर वर्षा होने पर अनाज बोकर फसल तैयार की जाती है। उसे झूमिंग या स्थानान्तरित कृषि कहते हैं। आदिवासियों में यह वालरा' नाम से जानी जाती है। पहाड़ी क्षेत्रों की वालरा 'चिमाता' एवं मैदानी क्षेत्रों की वालरा 'दजिया' कहलाती है।

शुष्क कृषि (बारानी)-

50 सेमी. से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में वर्षा जल का सुनियोजित रूप से संरक्षण व उपयोग कर कम पानी की आवश्यकता वाली व शीघ्र पकने वाली फसलों की कृषि की जाती है। यह कृषि राज्यों के अधिकांश जिलों में की जाती है। (सर्वाधिक-बाड़मेर)

आर्द्र कृषि-

100 सेमी. से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में उपजाऊ कांप व काली मिट्टी पर उन्नत व व्यापारित फसल प्राप्त की जाती है, वह 'आर्द्र कृषि' कहलाती है। राज्य के बारां, झालावाड़, कोटा, बाँसवाड़ा, एवं चित्तौड़गढ़ में आर्द्र कृषि की जाती है।

सिंचित कृषि-

यह कृषि राज्य के उन क्षेत्रों में कि जाती है जहां सिंचाई के लिए जल नहरों, नलकूपों से लिया जाता है । जैसे हनुमानगढ़ , गंगानगर में नहरों का जल सुगमता से उपलब्ध हो जाता है ।राज्य की लगभग 32 प्रतिशत कृषि भूमि पर वर्षा के अलावा अन्य स्रोतों से पानी देकर फसल तैयार की जाती है। यह 50 से 100 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाती है। अलवर, भरतपुर, करौली, सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, अजमेर, गंगानगर, हनुमानगढ़ आदि जिले इस क्षेत्र में आते हैं।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

2. ऋतु के आधार पर

(i) खरीफ की फसलें

(अ) खरीफ की प्रमुख फसलें धान, मक्का, ज्वार, मूंग, मूंगफली, लोबिया, कपास, जूट, बाजरा, ग्वार, तिल, मोठ आदि है।

(ब) खरीफ की फसलों की बुवाई जुलाई में और कटाई अक्टूबर महीने में की जाती है।

(ii) रबी की फसलें

(अ) रबी की प्रमुख फसलें जौ, राई, गेहूँ, जई, सरसों, मैंथी, चना, मटर आदि है।

(ब) रबी की फसल की बुवाई अक्टूबर में तथा कटाई अप्रैल महीने में की जाती है।

(iii) जायद की फसलें

(अ) जायद की प्रमुख फसलों में तरबूज, खरबूजा, टिंडा, ककड़ी, खीरे, मिर्च आदि है।

(ब) जायद की फसल की बुवाई मार्च में तथा कटाई जून महीने में की जाती है।

3. उपयोग के आधार पर

(i) खाद्यान फसलें - राजस्थान की खाद्यान फसलें गेहूँ, चावल (धान), बाजरा, जौं, मक्का, ज्वार, दलहन, तिलहन प्रमुख है।

(ii) वाणिज्यिक फसलें - राजस्थान की वाणिज्यिक फसलें कपास और गन्ना है।

राजस्थान में खाद्यान्नों में गेहूं, जौं, चावल, मक्का, बाजरा, ज्वार, रबी एवं खरीफ की दलहन फसलें शामिल हैं।

1. **गेहूं**

राज्य में सर्वाधिक क्षेत्र में खाद्यान्न फसल के रूप में गेहूं बोया जाता है। गेहूं को बोये जाने के समय तापमान कम से कम 8° से 10° सें. तक होना चाहिए तथा पकने के समय तापमान 15° से 20° सें. तक होना चाहिए।

50 सेमी. से 100 सेमी. के बीच वर्षा की आवश्यकता होती है। राजस्थान में साधारण गेहूं (ट्रीटीकम) एवं मेकरोनी गेहूं (लाल गेहू) सर्वाधिक पैदा होता है। गेहूं उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान के जयपुर, अलवर, कोटा, गंगानगर, हनुमानगढ़ और सवाई माधोपुर जिले हैं।

राजस्थान में सर्वाधिक गेहूं श्रीगंगानगर जिले में उत्पादित होता है इसलिए श्रीगंगानगर जिला अन्न का भण्डार कहलाता है।

नाइट्रोजन युक्त दोमट मिट्टी, महीन काँप मिट्टी व चीका प्रधान मिट्टी गेहूं उत्पादन हेतु उपयुक्त होती है। मिट्टी ph मान 5 से 7.5 के मध्य होना चाहिए।

राजस्थान में दुर्गापुरा - 65, कल्याण सोना, मैक्सिकन, सोनेरा, शरबती, कोहिनूर, सोनालिका, गंगा सुनहरी, मंगला, कानिँया-65 ,लाल बहादुर, चम्बल-65, राजस्थान-3077 आदि किस्में बोई जाती हैं।

गेहूं में छाछ्या, करजवा, रतुआ, चेपा रोग पाए जाते हैं।

इण्डिया मिक्स- गेहू, मक्का व सोयाबीन का मिश्रित आटा।

2. **जौं**

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान में जौं उत्पादन क्षेत्रफल लगभग 2.5 लाख हेक्टेयर है।

भारत के कुल उत्पादन का 1/4 भाग राजस्थान में पैदा होता है। जौं शीतोष्ण जलवायु का पौधा है तथा रबी की फसल है।

जौं की बुवाई के समय लगभग 10° सें. तापमान की आवश्यकता है तथा काटते समय 20° से 22° सेन्टीग्रेड तापमान होना चाहिए।

जौं के लिए शुष्क और बालू मिश्रित कॉंप मिट्टी उपयुक्त रहती है।

जौं की प्रमुख किस्में ज्योतिराजकिरण, R-D. 2503, मोल्वा आदि है। राजस्थान में प्रमुख जौं उत्पादन जिले जयपुर (सर्वाधिक), उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा व अजमेर हैं।

जौं का उपयोग मिसी रोटी बनाने, मधुमेह रोगी के उपचार, शराब व बीयर बनाने, माल्ट उद्योग में किया जाता है।

3. बाजरा

विश्व का सर्वाधिक बाजरा भारत में पैदा होता है। बाजरे के उत्पादन एवं क्षेत्रफल में राजस्थान का भारत में प्रथम स्थान है। राजस्थान देश का लगभग एक तिहाई बाजरा उत्पादित करता है।

बाजरा राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्र पर बोई जाने वाली खरीफ की फसल है।

बाजरा के लिए शुष्क जलवायु उपयुक्त रहती है।

बाजरे की बुवाई मई, जून या जुलाई माह में होती है। बाजरे की बुवाई करते समय तापमान 35° से 40° सेन्टीग्रेड तक होना चाहिए।

बाजरे के लिए 50 सेमी. से कम वर्षा उपयुक्त रहती है। बाजरा बलुई, बंजर, मरुस्थलीय तथा अर्द्ध कॉंपीय मिट्टी में पैदा होता है।

बाजरा की प्रमुख किस्में ICTP - 8203,WCC - 75,राजस्थान - 171,RHB - 30,RHB - 58,RHB - 911, राजस्थान बाजरा चरी-2 है। बाजरा को जोगिया, ग्रीन ईयर, कण्डुआ, सूखा रोग नुकसान पहुँचाते हैं।

केन्द्र सरकार द्वारा अखिल भारतीय समन्वित बाजरा सुधार परियोजना व मिलेट डायरेक्टोरेट को क्रमशः पूना व चौन्नई से जोधपुर व जयपुर स्थानांतरित किया गया है। दो नए केन्द्र बीकानेर एवं जोधपुर में स्थापित किए गए हैं।

४. **मक्का**

भारत के कुल मक्का उत्पादन का 1/8 भाग राजस्थान में उत्पादित होता है। मक्का मुख्यतरू खरीफ की फसल है।

उष्ण एवं आर्द्र जलवायु मक्का के उपयुक्त रहती है। मक्का की बुवाई करते समय औसत तापमान 21° से 27° सेन्टीग्रेड तक होना चाहिए।

मक्का के लिए 50 सेमी. से 80 सेमी. तक वर्षा की आवश्यकता रहती है। मक्का के लिए नाइट्रोजन व जीवांशयुक्त मिट्टी, दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त रहती है।

मक्का की प्रमुख किस्में माही कंचन, माही धवल, सविता (संकर किस्म), नवजोत, गंगा-2, गंगा-11 ,अगेती-76, किरण आदि है।

मक्का की हरी पत्तियों से साईलेज चारा बनाया जाता है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार मक्के के पौधे का 80 प्रतिशत विकास रात के समय होता है।

बांसवाड़ा जिले के बोरवर गाँव में कृषि अनुसंधान केन्द्र संचालित है। इस केन्द्र ने मक्का की संयुक्त किस्में माही कंचन एवं माही धवल विकसित की है।

मक्का के दानों से मांडी (स्टार्च), ग्लूकोज तथा एल्कोहल तैयार किया जाता है। मक्का मेवाड़ क्षेत्र का प्रमुख खाद्यान्न है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

5. **चावल** -

चावल उष्ण कटिबंधीय पौधा है। इसके लिए 20° से 27° सेन्टीग्रेड तक तापमान एवं 125 से 200 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती हैं।

चावल के लिए काँपीय, दोमट, चिकनी मिट्टी उपयुक्त रहती है।

वर्तमान में राजस्थान में जापानी पद्धति से चावल की खेती की जाती है। चावल की प्रमुख किस्में कावेरी, जया, परमल, चम्बल, गरडाबासमती, NP-130,BK-190,T& 29,सफेदा एवं लकडा, माही सुगंधा (कृषि अनुसंधान केन्द्र, बांसवाड़ा द्वारा विकसित) हैं।

राजस्थान में प्रमुख चावल उत्पादक जिले बांसवाड़ा, बूंदी, हनुमानगढ़, बारां, कोटा, उदयपुर और गंगानगर हैं।

राजस्थान का लगभग आधा चावल उत्पादन केवल दो जिलों बांसवाड़ा व हनुमानगढ़ में होता है।

राजस्थान में चावल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन सर्वाधिक हनुमानगढ़ जिले में होता है।

6. **ज्वार** -

ज्वार उष्ण कटिबंधीय खरीफ की फसल है तथा इसके लिए औसत तापमान 20° से 32° सेन्टीग्रेड तथा 50 से 60 सेमी. वार्षिक वर्षा उपयुक्त रहती है। ज्वार की बुवाई हेतु दोमट मिट्टी अथवा गहरी या मध्य काली मिट्टी उपयुक्त रहती है।

राजस्थान में ज्वार की दो प्रमुख किस्में-

राजस्थान चरी-1 एवं चरी-2 चारे के लिए तैयार की गई है।

7. **दलहन** -

राज्य में रबी मौसम में चना, मटर व मसूर तथा खरीफ के मौसम में मोठ, उड़द, मूंग, चवला व अरहर प्रमुख दलहनी फसलें हैं।

दलहन का उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से 1974 - 75 में केन्द्र संचालित दलहन विकास योजना शुरू की गई।

क्षेत्रफल की दृष्टि से बाजरा, गेहूं के बाद चने को तीसरा स्थान प्राप्त है।

राजस्थान में कुल दलहनी फसलों में चने का उत्पादन सर्वाधिक होता है।

चना की बुवाई के समय तापमान लगभग 20° सेन्टीग्रेड एवं काटते समय तापमान 30° से 35° सेन्टीग्रेड तक होना चाहिए।

चना के लिए हल्की बलुई मिट्टी उपयुक्त रहती है तथा 50 से 85 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती है।

चना की प्रमुख किस्म RSG - 2,BJ-209,GNG-16,RS& - 10,वरदान, सम्राट, काबुली आदि हैं।

चना का उपयोग दाल बनाने, जानवरों को खिलाने तथा माल्ट उद्योग में किया जाता है।

गेहूं व जौ के साथ चना बोना स्थानीय भाषा में गोचनी या बेझड़ कहलाता है।

मोठ- खरीफ की दलहन फसलों में मोठ सर्वाधिक भू-भाग पर बोया जाता है।

उड़द- उड़द उष्ण कटिबंधीय पौधा है। इसके लिए दोमट तथा भारी दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है।

व्यापारिक फसलें

1. **गन्ना** -

गन्ना एक प्रमुख व्यापारिक फसल है, यह मूल रूप से भारतीय पौधा है। विश्व में भारत का गन्ना उत्पादन में प्रथम स्थान है।

गन्ने की खेती के लिए 15° से 24° सेन्टीग्रेट तापमान तथा 100 से 200 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती है।

राजस्थान में गन्ना बूंदी (सर्वाधिक), उदयपुर, चितौड़गढ़ व गंगानगर जिलों में उत्पादित होता है।

गन्ने में लाल सड़न रोग, पाइरिला, कण्डवा, रेडक्रास आदि रोग लग जाते हैं।

2. **कपास** -

कपास मूलतः भारतीय पौधा है। कपास के लिए 20° से 30° सेन्टीग्रेट तापमान, 50 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा तथा नमी युक्त चिकनी मिट्टी या काली मिट्टी उपयुक्त रहती है।

राजस्थान में कपास को ग्रामीण भाषा में बणीया कहा जाता है। इसे सफेद सोना भी कहा जाता है।

कपास की बुवाई मई - जून के महीने में की जाती है। ज्यादा ठंड से कपास की फसल को बालबीविल कीड़ा नुकसान पहुँचाता है। इसकी रोग प्रतिरोधक फसल भिण्डी होती है।

राजस्थान में कपास गंगानगर (सर्वाधिक), हनुमानगढ़, अजमेर, भीलवाड़ा, झालावाड़, चितौड़गढ़, उदयपुर, पाली, कोटा, बूंदी व झालावाड़ जिलों में उत्पादित होता है।

कपास की एक गांठ का वजन 170 किलोग्राम होता है।

राज्य में में बोई जाने वाली कपास के विभिन्न प्रकार -

1. **नरमा** - श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ में बोयी जाती है।

2. **अमेरिकन कपास** - लम्बे रेशे वाली वाली कपास गंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में सर्वाधिक होती है।

3. **मालवी कपास**- यह कपास कोटा, बूंदी, झालावाड़ व टोंक जिलों में बोयी जाती है।

4. **देशी कपास** - यह कपास उदयपुर, चितौड़गढ़ व बांसवाड़ा जिलों में सर्वाधिक बोयी जाती है।

5. **मरुविकास (RAJ – H - H.-16)** - राजस्थान में कपास की पहली संकर किस्म।

6. **बी.टी. कपास**- बेसिलस थ्रेजेन्सिस (विशेष क्रिस्टल प्रोटीन बनाने वाला) का बीज में प्रत्यारोपण। इसमें जैव-अभियांत्रिकी तकनीक से बीज की संरचना में डी.एन.ए. की स्थिति को प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और टाक्सीकेट्स में बदला जाता है। राजस्थान के जैसलमेर व चुरु जिलों में कपास का उत्पादन नहीं होता है।

3. **तंबाकू-**

तम्बाकू का पौधा भारत में सर्वप्रथम 1508 में पुर्तगालियों द्वारा लाया गया।

तम्बाकू के लिए 20° से 35° सेन्टीग्रेड तापमान तथा 50 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती है।

तम्बाकू एक उष्ण कटिबंधीय पौधा है। राजस्थान में तम्बाकू की दो किस्में प्रमुख हैं-1. निकोटिना टुबेकम व 2. निकोटिना रास्टिका।

4. **ग्वार-**

ग्वार कपड़ा उद्योग, श्रृंगार, विस्फोटक सामग्री बनाने के काम आता है। ग्वार का उत्पादन बढ़ाने हेतु राजस्थान में दुर्गापुरा (जयपुर) स्थित कृषि अनुसंधान केन्द्र उन्नत किस्में तैयार करता है। सबसे बड़ी ग्वार मण्डी जोधपुर में स्थित है तथा ग्वार गम उद्योग भी जोधपुर में सर्वाधिक है। जोधपुर में ग्वार गम जाँच लैब स्थापित की गई है।

5. **खजूर-**

खजूर अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में स्थित है। वर्तमान में बीकानेर क्षेत्र में खजूर की खेती की जाती है।

खजूर की प्रमुख किस्में हिवानी, मेंजुल, अरबी खजूर, बहरी, जाहिदी आदि हैं। खजूर में लगने वाला प्रमुख रोग ग्रोफियोला है।

देश की पहली व एशिया की दूसरी सबसे बड़ी खजूर पौध प्रयोगशाला जोधपुर के चोपासनी में स्थापित की गई है।

6. **ईसबगोल (घोड़ा जीरा)** -

ईसबगोल के प्रमुख उत्पादक जिले जालौर, बाड़मेर, सिरोही, नागौर, पाली तथा जोधपुर हैं। विश्व का लगभग 80 प्रतिशत ईसबगोल भारत में पैदा होता है।

भारत का 40 प्रतिशत ईसबगोल जालौर जिले में पैदा होता है। ईसबगोल का उपयोग औषधि निर्माण, कपड़ों की रंगाई छपाई, सौंदर्य प्रसाधन, फाइबर फूड के निर्माण में किया जाता है।

मण्डोर (जोधपुर) में स्थित कृषि अनुसंधान केन्द्र में ईसबगोल पर शोध कार्य किया जा रहा है।

राजस्थान में औषधीय महत्व की फसलों के होने वाले निर्यात में ईसबगोल का निर्यात सर्वाधिक होता है। आबूरोड में ईसबगोल का कारखाना स्थापित किया गया है।

7. **जीरा**-

जीरा रबी की फसल है। जीरे में होने वाले प्रमुख रोग छाछिया, झुलसा, उकटा आदि है।

जीरे की प्रमुख किस्में RS-1SC&43 हैं।

जीरा उत्पादन व क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का देश में पहला स्थान है।

जीरा मुख्यतरः जालौर जिले की भीनमाल, जसवंतपुरा व रानीवाड़ा तहसीलों में पैदा होता है। राजस्थान में जीरे की सबसे बड़ी मंडी भदवासिया (जोधपुर) में स्थित है।

<u>तिलहन-</u>

तिलहन के उत्पादन में राजस्थान का उत्तर प्रदेश के बाद दूसरा स्थान है। राजस्थान में रबी की तिलहन फसलों में सरसों, राई, तारामीरा व अलसी तथा खरीफ की तिलहन फसलों में मूंगफली, सोयाबीन, तिल व अरंडी प्रमुख हैं। राजस्थान में तिलहन के क्षेत्र में लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति है।

1. **सरसों**-

भारत विश्व में सर्वाधिक सरसों उत्पादन करता है। राजस्थान को सरसों का प्रदेश कहा

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 823319571 , 8504091672

अध्याय – ५

राजस्थान की नदी घाटी एवं सिचाई परियोजनायें

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान की नदी घाटी परियोजना ओं का विस्तार से अध्ययन करेंगे ।जैसाकि आपको पता है जल ही जीवन है जैसे कि सिंधु घाटी सभ्यता जल की वजह से ही सिंधु और उसकी सहायक नदियों के आसपास पनप रही थी ।जल जहां भी होगा वहां एक अच्छी वनस्पति, जीव, जंतु पनप ते हुए देखते हैं।

नदियां जल का प्राकृतिक स्रोत होती हैं और इन्हीं नदियों के माध्यम से सिंचाई, पेयजल, विद्युत उत्पादन जैसी सुविधाएं प्राप्त की जाती है ।इसीलिए नदियों पर परियोजनायें बनाई जाती है।

राजस्थान में सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि यहां की भूमि शुष्क है और वर्षा कम होती है ।प्रिय छात्रों हम शुरु आत करते हैं सिंचाई से ।

सिंचाई- वर्षा के अभाव में भूमि को कृत्रिम तरीके से पानी पिलाने की क्रिया को सिंचाई कहा जाता है ।क्योंकि राजस्थान एक कृषि प्रधान राज्य है यहां की लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर आधारित है राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के आधारपर जैसे बलूई मिट्टी वर्षा की कमी के कारण सिंचाई की अत्यधिक आवश्यकता होती है ।क्योंकि राजस्थान में भारत के औसत वर्षा का लगभग आधे से भी कम औसत वर्षा होती है।भारत में कुल वर्षा लगभग ।।7 सेंटी मीटर होती है जबकि ऽऽ सेंटी मीटर होती है।

सिंचाई की विशेषताएं -

- सिंचाई से कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है।
- सिंचाई के द्वारा । वर्ष में । से अधिक फसलों का उत्पादन किया जा सकता है।
- जिन स्थानों पर कृषि के कृत्रिम तरीके उपलब्ध नहीं होते उन स्थानों पर कृषि सीमित होती है लेकिन जिन स्थानों पर उपलब्ध होते हैं वहां पर कृषि अर्थ व्यवस्था की विशेषता बन जाती है।
- सिंचाई कृषि को स्थायित्व प्रदान करती हैं लेकिन जिन स्थानों पर किसान वर्षा पर आधारित होते हैंउन स्थानों पर कृषि मान सून काजु आ बन जाती है।

- राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है जिसका कुल क्षेत्रफल 342.52 लाख हेक्टेयर है।

राजस्थान में सिचाई के साधन -

1. कुएं व नलकूप -

· राजस्थान में कुएं व नलकूप से लगभग 69.73% सिचाई होती है राजस्थान में सबसे अधिक इन साधनों से सिचाई "जयपुर" जिले में होती है इसके अलावा अलवर, भरतपुर, करौली , दौसा, सवाई माधोपुर में होती है।

2. नहरें -

· राजस्थान में नेहरों से लगभग 29.60% सिचाई होती है सबसे अधिक नहरों से सिंचाई गंगानगर और हनुमानगढ़ जिले में होती है इसकेअलावा चुरू, झुंझुनू, बीकानेर,जैसलमेर,बाड़मेर,जालौर, जोधपुरआदि में भी नेहरों के द्वारा ही सिचाई होती है।

3. तालाब -

· राजस्थान में तालाब से 0.69% सिचाई होती है सबसे अधिक तालाबों से सिचाई वाला जिला "भीलवाड़ा" है इसके अलावा दक्षिणी राजस्थान में भी तालाबों से सिचाई होती है।दोस्तों अब आप जानते हैं नदी घाटी परियोजना ओं के बारे में।

प्रिय छात्रों नदी घाटी परियोजनाएं को चार भागो में विभाजित किया गया है।

1. बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना -

· बहुउद्दे शीय परियोजना एंवे परियोजनाएं होती हैं जिन से सिचाई , पेयजल एवं विद्युत आदि की पूर्ति करवाई जाती है अर्थात एक से अधिक उद्देश्यों के लिए बनाई गई परियोजना बहु उद्देशीय परियोजना कहती है ।जैसे -

(i) राजस्थान में भाखड़ा नांगल परियोजना जो कि सिचाई, पेयजल एवं विद्युत बनाने के लिए प्रयोग में की जाती है,

(ii) व्यास परि योजना

(iii) चंबल घाटी परियोजना

(iv) माही परियोजना इत्यादि

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

2. वृहद परियोजना -

· वें परियोजनाएं जिनका सिचाई क्षेत्र 10000 हेक्टेयर से अधिक होता है बृहद परियोजना कहलाती है जैसे – गंगा नहर परियोजना, इंदिरा गांधी नहर परियोजना, राजीव गांधी सिद्ध मुख नहर, नर्मदा परियोजना,

3. मध्यम परियोजनाएं -

· वें परियोजनाए जिनका क्षेत्र से 10000 तक होता है जैसे -

सोम - कमला- अंबा परियोजना, विलास परियोजना इत्यादि।

4. लघु परियोजनाएं -

· वें परियोजनाएं जिनका कृषि योग्य क्षेत्र 2000 हेक्टेयर से कम होता है लघु परियोजनाएं कहलाती हैं।

7. बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना -

(i) भाखड़ा – नांगल परियोजना -

- भाखड़ा – नांगल परियोजना सतलज नदी पर बनी हुई है। यह भारत देश की सबसे बड़ी बहु उद्देशीय परियोजना है जो कि राजस्थान, पंजाब एवं हरियाणा की मिश्रित परियोजना है।

- इस परियोजना के निर्माण का सर्व प्रथम विचार 1908 में गवर्नर "सर लुई सडेन" के द्वारा दिया गया था और इसका निर्माण कार्य 1948 के बाद प्रारंभ हुआ।

- इस परियोजना का निर्माण दो चरणों में पूरा किया गया -

1. भाखड़ा बांध -

- भाखड़ा बांध यह देश का तीसरा

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोटस खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 823319571 , 8504091672

अध्याय – 1

एतिहासिक पर्यटन स्थल

रणथम्भौर दुर्ग :

- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित है।
- 8वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा निर्मित।
- अण्डाकार आकृति में निर्मित।
- गिरि एव वन दोनों दुर्गों की विशेषता रखता है।
- अबुल फजल : बाकी सब किले नंगे है पर रणथम्भौर दुर्ग बख्तरबंद है।
- हम्मीर के समय जलालुद्दीन खिलजी ने यहाँ एक विफल आक्रमण किया था।
- इस विफलता के बाद खिलजी ने कहा था : ऐसे 10 किलो को में मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझना।
- 1301 ई. अलाउद्दीन ने रणथम्भोर किले पर आक्रमण किया। उस समय रणथम्भौर का पहला साका हम्मीर के नेतृत्व में हुआ।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध है।
- इस किले में : जोगी महल, सुपारी महल, रणत भंवर (गणेश जी का मंदिर : शादी की पहली कुमकुम पत्री यहाँ भेजी जाती हैं), पदम तालाब, जौरा-भौरां महल, पीर सद्‌द्दीन की दरगाह।
- अकबर कालीन टकसाल यहाँ स्थित है।

आमेर का किला :

- इसे काकिलगढ़ कहा जाता है।
- मानसिंह प्रथम ने इसका निर्माण करवाया था।
- आमेर के किले में 'सुहाग मंदिर है।
- यह रानियों के हास परिहास का स्थान था।
- सुख मंदिर : एक जैसे 12 कमर है, जो मिर्जा राजा जयसिंह ने बनवाए थे।
- दौलाराम का बाग मावठा जलाशय शिला माता का मंदिर जगत शिरोमणि मंदिर अम्बिकेश्वर मंदिर बारहदरी महल शीश महल दीवान-ए-आम दीवान-ए-खास केसर क्यारी बगीच

नाहरगढ़ का किला :

- इस किले का निर्माण सवाई जयसिंह ने करवाया था।
- जगतसिंह द्वितीय की प्रेमिका रसकपूर को यही गिरफ्तार करके रखा गया था।
- सवाई माधोसिंह द्वितीय ने अपनी 9 पासी/पासवानों के लिए 9 एक जैसे महल बनवाए।
- इसे जयपुर का 'पहरेदार किला' कहते हैं।
- प्रारम्भ में इसका नाम सुदर्शनगढ़ था, बाद में नाहरसिंह भौमियाजी के नाम पर इसका नाम नाहरगढ़ पड़ गया।

जैसलमेर दुर्ग :

- जैसलमेर के राजा जैसल (1155 ई.) ने इस किले का निर्माण करवाया।
- जैसलमेर के किले में 99 बुर्जे बनी हुई हैं।
- जैसलमेर का किला त्रिभुजाकार (त्रिकुट) आकृति में बना हुआ है।
- जैसलमेर का किला अंगड़ाई लेते शेरे के समान प्रतीत होता है।
- जैसलमेर के किले को स्वर्णगिरि का किला कहते हैं इसे सोनार का किला भी कहते हैं।
- सत्यजीत रे ने 'सोनार किला' नामक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनायी थी।
- जैसलमेर के किले में दोहरा परकोटा बना हुआ है जिसे कमर कोट कहा जाता है।
- जैसलमेर का किला अपने ढाई साकों के लिए प्रसिद्ध है।
- अबुल फजल ने कहा था : पत्थर की टांगें ही आपको जैसलमेर के किले तक पहुँचा सकती हैं।
- इस किले में चूने का उपयोग नहीं किया है। जैसलमेर के किले की छत लकड़ी की बनी हुई है।
- बादल महल बना हुआ है।
- जवाहर विलास महल 2009 ई. में जैसलमेर किले में 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।

तारागढ़ (बूंदी) :

- इस किले का निर्माण हाड़ा शासक बरसिंह ने करवाया था।

- दूर से देखने पर यह तारे समान दिखायी देता है।

इसमें सुख महल, छत्र महल

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195171 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 6

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनितिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया (वनरक्षक-2013 में पूछा गया सवाल)
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया।
- जोधपुर के बौक शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली महाभारत शैली/गुर्जर-प्रतिहार शैली प्रचलित थी।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहारवंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में गुर्जर-प्रतिहार के नाम से जाना गया।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था।गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार गुर्जर प्रतिहार कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी भीनमाल (जालौर) थी। बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' का सर्वप्रथम उल्लेख से मिलती है।
- डा आर सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डोर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत सी-यू-की में कु-चे-लो (गुर्जर) देश का उल्लेख करता है।
- जिसकी राजधानी पि-लो-मो-लो (भीनमाल) में थी। अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को 'जुर्ज' भी कहा है।

- अल मसूदी प्रतिहारों को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को 'बोरा' कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्रजी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुजर कहलाए।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते है।जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को ईरानी मूल के बताते हैं।
- मिस्टर जैक्सन ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था कनिंघम ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। मुहणोत नैणसी (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमे से दो प्रमुख थी - मण्डोर व भीनमाल।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी।

<u>भीनमाल शाखा (जालौर)</u>

<u>संस्थापक - नागभट्ट प्रथम।</u>

- रघुवंशी प्रतिहारों ने चावडों से प्राचीन गुर्जर देश छीन लिया और अपनी राजधानी भीनमाल को बनाया। भीनमाल शाखा के प्रतिहारों के उत्पति के विषय में जानकारी ग्वालियर प्रशस्ति से मिलती है। जो प्रतिहार शासक भोज प्रथम के समय उत्कीर्ण हुई।
- प्रसिद्ध कवि राजशेखर के ग्रंथों से भी भीनमाल के प्रतिहारों की जानकारी मिलती हैं।

<u>अवन्ति/उज्जैन शाखा</u>

- नागभट्ट प्रथम के समय दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित।

<u>कन्नौज शाखा</u>

- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।
- कवि वृष की उपाधि मुंज राजा को दी गई थी ।
- आभानेरी तथा राजोरगढ़ के कलात्मक वैभव गुर्जर प्रतिहार काल के है ।
- गुर्जरों तथा अन्य पिछड़ी जातियों (एस बी सी) के लिए राजस्थान सरकार ने 2015 मे 5 प्रतिशत कोटे की व्यवस्था की ।

मण्डोर शाखा (जोधपुर)

संस्थापक - रज्जिल

- गुर्जर प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी मण्डोर थी ।
- गुर्जर प्रतिहारों की इन शाखाओं में सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मण्डोर के प्रतिहार थे । मंडोर के प्रतिहार क्षत्रीय माने जाते है ।

हरिशचंद्र :-

- हरिशचंद्र को प्रतिहार वंश का संस्थापक माना जाता है । हरिशचंद्र को प्रतिहारों का गुरु/गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरुष/ गुर्जर प्रतिहारों का मूल पुरुष कहते है ।
- हरिश्चंद्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण तथा दूसरी क्षत्रिय पत्नी थी । क्षत्रिय पत्नी का नाम भद्रा थी ।
- इसकी क्षत्रिय पत्नी के चार पुत्र हुए जिनके नाम भोगभट्ट, कध्दक, रज्जिल और दह थे ।

रज्जिल: :-

- गुर्जर प्रतिहार राजवंश के आदिपुरुष हरिशचंद्र थे, तो मण्डोर के गुर्जर प्रतिहार राजवंश के संस्थापक रज्जिल थे ।
- रज्जिल ने मण्डोर को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया

नरभट्ट :-

- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नरभट्ट का उल्लेख 'पेल्लोपेल्ली' नाम से किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ साहसिक कार्य करने वाला होता है ।

नागभट्ट प्रथम (730-750ई)

- Nagabhata प्रथम को 'नागवलोक' तथा इसके दरबार को नागवलोक दरबार कहा जाता था ।

- *नागभट्ट प्रथम को प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक कहा जाता है।*
- *इसकी जानकारी हमें पुलिकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से प्राप्त होती है।*

नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल को चांवडों से जीता तथा 730 ई. में भीनमाल की राजधानी

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195971 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मुगल सम्राटों और उनकी राजपूत नीति -

इस लेख में हम विभिन्न मुगल सम्राटों और उनकी राजपूत नीतियों के बारे में चर्चा करेंगे।

बाबर:

बाबर की राजपूतों के प्रति कोई सुनियोजित नीति नहीं थी। उसे मेवाड़ के राणा साँगा और चंदेरी के मेदिनी राय के खिलाफ लड़ना पड़ा क्योंकि भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना और सुरक्षा के लिए यह आवश्यक था। दोनों अवसरों पर, उन्होंने अपनी सफलता के बाद जिहाद की घोषणा की और राजपूतों के सिर की मीनारों को उठाया। लेकिन उन्होंने एक राजपूत राजकुमारी के साथ हुमायूँ से शादी की और राजपूतों को सेना में नियुक्त किया। इस प्रकार, उन्होंने न तो राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की और न ही उन्हें अपना स्थायी दुश्मन माना।

हुमायूं:

हुमायूँ ने राजपूतों के बारे में अपने पिता की नीति को जारी रखा। हालाँकि, उसने मेवाड़ के राजपूतों से दोस्ती करने का एक अच्छा अवसर खो दिया। उन्होंने मेवाड़ को गुजरात के बहादुर शाह के खिलाफ भी मदद नहीं की, जब मेवाड़ की रानी कर्णावती ने उनकी बहन बनने की पेशकश की थी। वह शेरशाह के खिलाफ मारवाड़ के मालदेव का समर्थन पाने में भी असफल रहा।

शेर शाह:

शेरशाह अपनी राजसत्ता के अधीन राजपूत शासकों को लाना चाहता था। 1544 ई। में, उसने मारवाड़ पर हमला किया और उसके बड़े हिस्से पर कब्जा करने में सफल रहा। रणथंभौर पर भी उसका कब्जा हो गया, जबकि मेवाड़ और जयपुर के शासकों ने बिना लड़े उसकी आत्महत्या स्वीकार कर ली।

उसने अपनी मृत्यु से ठीक पहले कालिंजर पर भी कब्जा कर लिया। इस प्रकार, वह अपने उद्देश्य में सफल रहा। उनकी सफलता का एक प्राथमिक कारण यह था कि उन्होंने राजपूत शासकों के राज्य को गिराने की कोशिश नहीं की। जिन्होंने उसकी आत्महत्या स्वीकार की, वे अपने राज्यों के स्वामी रह गए।

अकबर:

- अकबर पहला मुगुल सम्राट था जिसने राजपूतों के प्रति एक सुनियोजित नीति अपनाई। उनकी राजपूत नीति के निर्माण में विभिन्न कारकों ने भाग लिया। अकबर एक साम्राज्यवादी था। वह अपने शासन को यथासंभव भारत के क्षेत्र में लाना चाहता था।
- इसलिए, राजपूत शासकों को उसकी अधीनता में लाना आवश्यक था। अकबर राजपूतों की शिष्टता, आस्था, मर्यादा, युद्ध कौशल आदि से प्रभावित था। उसने उन्हें अपने दुश्मन के रूप में बदलने के बजाय उनसे दोस्ती करना पसंद किया।
- वह विदेशियों पर निर्भर रहने के बजाय भारतीय लोगों के बीच से भरोसेमंद सहयोगी चाहते थे। अफगानों और उनके रिश्तेदारों के विद्रोह, मिर्ज़ो ने अपने शासन के शुरुआती दौर में, उन्हें इस आवश्यकता के बारे में आश्वस्त किया। इसलिए, राजपूत उनकी अच्छी पसंद बन गए। अकबर की उदार धार्मिक नीति ने भी उनसे मित्रता करने का निर्देश दिया।
- अकबर ने राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की, लेकिन साथ ही उन्हें अपनी अधीनता में लाने की इच्छा भी की।
- हम राजपूत शासकों के बारे में निम्नलिखित तीन सिद्धांत पाते हैं:

(क) उसने राजपूतों के मजबूत किलों पर कब्जा कर लिया जैसे कि चित्तौड़, मेड़ता, रणथंभौर, कालिंजर आदि के किले। इसने राजपूतों की शक्ति को कमजोर कर दिया ताकि वे प्रतिरोध की पेशकश कर सकें।

(ख) उन राजपूत शासकों ने या तो अपनी संप्रभुता स्वीकार कर ली या उनके साथ वैवाहिक संबंधों में प्रवेश किया जो स्वेच्छा से अपने राज्यों के स्वामी थे। उन्हें राज्य में उच्च पद दिए गए थे और उनके प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं था। हालाँकि, उन्हें सम्राट को वार्षिक श्रद्धांजलि देने के लिए कहा गया था।

(c) जिन राजपूत शासकों ने उनका विरोध किया, उन पर हमला किया गया और उनकी संप्रभुता को स्वीकार करने के लिए मजबूर करने के प्रयास किए गए। मेवाड़ का मामला इसका सबसे अच्छा उदाहरण था।

- 1562 ई। में मेड़ता के किले पर कब्जा कर लिया गया था, जो जयमल के अधीन था, जो मेवाड़ के शासक के सामंती प्रमुख थे। 1568 ई। में, चित्तौड़ को मेवाड़ से छीन लिया गया और 1569 ई। में राजा सुरजन राय को रणथंभौर के किले को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसी वर्ष, राजा राम चंद्र ने स्वेच्छा से कालिंजर के किले को अकबर को सौंप दिया।

- उन शासकों में जिन्होंने अकबर की संप्रभुता को स्वेच्छा से स्वीकार किया था, आमेर (जयपुर) के राजा भारमल थे। वह 1562 ई। में अकबर से मिला, उसने उसकी संप्रभुता स्वीकार कर ली और अपनी बेटी की शादी उससे कर दी। इसी राजकुमारी ने सलीम को जन्म दिया। अकबर ने राजा भारमल, उनके बेटे, भगवान दास और उनके पोते मान सिंह को उच्च मानस पुरस्कार दिया
- चित्तौड़ के किले के पतन के बाद बीकानेर और जैसलमेर जैसे कुछ राजपूत राज्यों ने स्वेच्छा से अकबर की आत्महत्या स्वीकार कर ली, जबकि उनमें से कुछ ने उसके साथ वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश किया। हल्दीघाटी की लड़ाई के बाद कुछ और राजपूत शासकों जैसे बांसवाड़ा, बूंदी और ओरछा ने भी अकबर की आत्महत्या स्वीकार कर ली। इस प्रकार, अधिकांश राजपूत शासकों ने बिना किसी लड़ाई के अकबर को सौंप दिया, उनकी सेवा में प्रवेश किया, उनके वफादार सहयोगी बने और उनमें से कुछ उनके रिश्तेदार भी बने।

- एकमात्र राज्य जिसने प्रस्तुत करने से इनकार कर दिया था वह मेवाड़ था। मेवाड़ का शासक परिवार, सिसोदिया राजस्थान के राजपूत शासकों में सबसे सम्मानित परिवार था। मेवाड़ के तत्कालीन शासक उदय सिंह थे। मेवाड़ को राजनैतिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से जीतना आवश्यक था। राणा उदय सिंह ने मालवा के भगोड़े शासक, बाज बहादुर और विद्रोही- मिर्जा को आश्रय दिया था।
- राणा ने अकबर की संप्रभुता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था और उन राजपूत शासकों को देखा था जिन्होंने अकबर के साथ वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश किया था। मेवाड़ की विजय के बिना अकबर उत्तरी भारत की अपनी विजय को पूरा नहीं कर सकता था। इसके अलावा, मेवाड़ की अधीनता अन्य राजपूत शासकों को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करने के लिए आवश्यक थी। मेवाड़ की विजय आर्थिक दृष्टिकोण से भी उपयोगी थी।
- गुजरात के बंदरगाहों के माध्यम से पश्चिमी दुनिया के साथ उत्तरी भारत का व्यापार राजस्थान के माध्यम से किया गया था और जब तक मेवाड़ को प्रस्तुत करने के लिए कम नहीं किया गया था तब तक इसे सुरक्षित रूप से नहीं ले जाया जा सकता था। मेवाड़ की अधीनता इसलिए आवश्यक थी, अकबर ने 1567 ई। में इस पर आक्रमण किया
- राणा उदय सिंह ने अपने रईसों की सलाह पर चित्तौड़ छोड़ दिया और उदयपुर को अपनी नई राजधानी बनाया। अकबर ने चित्तौड़ को घेर लिया और 1568 ई। में कुछ महीनों की लड़ाई के बाद उस पर कब्जा कर लिया। लेकिन इसने मेवाड़ की विजय को पूरा नहीं किया क्योंकि इसका अधिकांश क्षेत्र अभी भी राणा के साथ बना हुआ था।
- राणा उदय सिंह की मृत्यु 1572 ई। में हुई थी कर्नल टॉड ने उदय सिंह को कायर बताया। हालाँकि, यह उचित नहीं है। अपने रईसों द्वारा सलाह दिए जाने पर उदय सिंह ने अपनी और

अपने परिवार की सुरक्षा के लिए किले को छोड़ दिया। उन्होंने जीवन भर अकबर को नहीं सौंपा।

- अपनी मृत्यु से पहले, उदय सिंह ने इच्छा व्यक्त की कि उनका बेटा जगमाल उन्हें सफल हो। लेकिन रईसों ने अन्यथा निर्णय लिया और अपने बड़े बेटे, प्रताप सिंह को सिंहासन पर बैठाया। राणा प्रताप मध्यकालीन भारत के इतिहास में एक महान व्यक्ति बन गए हैं।
- अकबर के प्रति उनका विरोध राजपूत इतिहास का एक शानदार अध्याय बन गया है। अकबर ने राजा मान सिंह, राजा भगवान दास और राजा टोडर मल को क्रमशः उनकी आत्महत्या स्वीकार करने की आवश्यकता के राणा को समझाने के लिए चित्रित किया। लेकिन राणा ने अकबर के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

1576 ई। में, अकबर ने मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए एक बड़ी सेना

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195871 , 8504091672

अध्याय – ९

राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र एवं आभूषण

राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र सामान्य जन में प्रचलित "वाद्य" यन्त्र को लोक वाद्य कहा जाता है।

लोक वाद्यों को सामान्यतः चार प्रकार से जाना जा सकता है :

(1) तत् वाद्य (2) घन वाद्य (3) अवनद्ध वाद्य (4) सुषिर वाद्य

घन वाद्य	अवनद्ध वाद्य	**सुषिर वाद्य**	तत् वाद्य
चोट या आघात से स्वर उत्पन्न करने वाले वाद्य)	**चमड़े से मढ़े हुए लोक वाद्य**	**जो वाद्य फूंक से बजते हो**	**तारों के द्वारा स्वर उत्पन्न करने वाले वाद्य**
मंजीरा, झांझ, थाली, रमझौल, करताल, खड़ताल, झालर, घुंघरु, घंटा, घुरालियां, भरनी, श्रीमंडल, झांझ,	चंग, डफ, धौंसा, तासा, खंजरी, मांदल, मृदंग, पखावज, डमरु, ढोलक, नौबत, दमामा,	बांसुरी, अलगोजा, शहनाई, पूंगी, सतारा, मशक, नड़, मोरचंग, सुरणाई, भूंगल, मुरली, बांकिया, नागफनी, टोटो, करणा, तुरही, तरपी, कानी।	जन्तर, इकतारा, रावणहत्था, चिकारा, सारंगी, कामायचा, सुरिन्दा, रबाज, तन्दूरा, रबाब, दुकाको, सुरिन्दा, भपंग, सुरमण्डल, केनरा, पावरा।

कागरच्छ, लेजिम, तासली, डांडिया।	टामक (बंब), नगाड़ा।		

घन वाद्य

ये वाद्य धातु से निर्मित होते हैं, जिनको आपस में टकराकर या डण्डे की सहायता से बजाया जाता है।

प्रमुख घन वाद्य (Musical Instruments of Rajasthan)

1. घुंघरु

- *लोक नर्तकों एवं कलाकारों का प्रिय वाद्य 'घुंघरु' पीतल या कांसे का बेरनुमा मणि का होता है। इसका नीचे का भाग कुछ फटा हुआ होता है तथा अन्दर एक लोहे, शीशे की गोली या छोटा कंकर डाला हुआ होता है जिसके हिलने से मधुर ध्वनि निकलती है।*
- *भोपे लोगों के कमर में बांधने वाले घुंघरु काफी बड़े होते हैं।*
- *बच्चों की करधनी तथा स्त्रियों की पायल आदि गहनों में लगने वाले घुंघरु बहुत छोटे होते हैं। उनमें गोली नहीं होती वरन् परस्पर टकराकर ही छम-छम ध्वनि करते हैं।*
- *नर्तक (स्त्री-पुरुष) के पैरों में घुंघरु होने से छम-छम की आवाज बहुत मधुर लगती है।*

2. करताल (कठताल)(KARTAL-Musical Instruments of Rajasthan)

- *नारद मुनि के नारायण-नारायण करते समय एक हाथ में इकतारा तथा दूसरे साथ में करताल ही होती है।*
- *यह युग्म साज है।*

इसके एक भाग के बीच में हाथ का अंगुठा समाने लायक छेद होता हैं तथा दूसरे भाग के बीच में चारों अंगुलियां समाने लायक लम्बा छेद होता है। इसके ऊपर-नीचे की गोलाई के बीच में, लम्बे-लम्बे छेद कर दो-दो झांझे बीच में कील डालकर पोई जाती है। दोनों भागों को अंगुठे और अंगुलियों में डालकर एक ही साथ में पकड़ा जाता

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195171 , 8504091672

अध्याय -11

लोक देवियाँ एवं देवता

राजस्थान के प्रमुख लोक देविया और देवता निम्नलिखित है -

करणी माता

- बीकानेर के राठौड़ शासकों की कुलदेवी। 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात। जन्म सुआप गाँव के चारण परिवार में।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।

करणी जी के काबे

- इनके मंदिर के चूहे। यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल
- राव कान्ह ने इनकी गायों पर हमला किया।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मन्दिर में चांदी के किवाड़ भेंट किया।
- इनके बचपन का नाम रिद्धबाई था।
- मठ – देवी के मन्दिर को मठ कहते हैं।
- अवतार - जगतमाता
- उपनाम – काबा वाली माता, चूहों की देवी।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ाजी' हैं। करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर है। करणी देवी का एकरूप 'सफेदचील' भी है।
- 'नेहड़ी' नामक दर्शनीय स्थल है जो करणी माता के मंदिर से कुछ दूर स्थित है।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- करणी जी के आशीर्वाद एवं कृपा से ही राठौड़ शासक 'रावबीका' नेबी का ने रमें राठौड़ वंश की स्थापना की थी। चौत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता है।

जीण माता -

- चौहान वंश की आराध्य देवी। ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी। मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है। मंदिर का निर्माण रैवासा (सीकर) में पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा।

- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढ़ाई प्याला मदिरा पान करती हैं। इसे प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती है।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ है। इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहतीहैं।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा है। यह गीत कनफटे जोगियों द्वारा डमरू एवं सारंगी वाद्य की संगत में गाया जाता है।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है।

कैला देवी -

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी। इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं।
- मंदिर : त्रिकूटपर्वतकीघाटी (करौली) में। यहाँ नवरात्रा में विशाल लक्खी मेला भरता है।
- कैलादेवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता है। कैलादेवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है।

शिला देवी -

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी। इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है।

अन्नपूर्णा -

- शिलामाता की यह मूर्तिपाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित है। महाराजा मानसिंह पं. बंगाल के राजा के दार से सन् 1604 में मूर्ति लाए थे।
- इस देवी को नरबलि दी जाती थी तथा यहाँ भक्तों की मांग के अनुसार मन्दिर का चरणामृत दिया जाता है। मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सका।

जमुवायमाता-

ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी। इनका मंदिर जमुवारामगढ़, जयपुर में

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 823319571 , 8504091672

अध्याय- 1

राजस्थान में स्थानीय नगरीय स्वशासन

पंचायती राज -

- स्थानीय शासन 'महात्मा गाँधी' की संकल्पना राम राज्य या ग्राम स्वराज्य का परिष्कृत रूप है। गाँधीजी की इस संकल्पना को फलीभूत करने के लिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 40 में राज्य सरकार को निर्देश दिए गए थे, जो 1993 में 73वें संविधान संशोधन के परिणामस्वरूप सम्भव हुआ।
- पंचायतीराज का उल्लेख **अनुच्छेद 40** में है। पंचायतीराज का उल्लेख संविधान के भाग 4 में नीति निर्देशक तत्वों में है। **पंचायतीराज राज्य सूची का विषय** है।
- लार्ड रिपन ने 1882 में स्थानीय स्वशासन प्रारम्भ किया। स्थानीय स्वशासन का जनक लार्ड रिपन है।
- गाँधीजी ने कहा था की भारत की आत्मा गाँवों में निवास करती है। गाँधी ने कहा था कि प्रत्येक गाँव,पंचायत का गणराज्य होगा। गाँधी जी ने कहा पंचायतीराज लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण में अस्तित्व रखती है।
- गाँधीजी ने ग्रामीण विकास का उल्लेख "माई पिक्चर ऑफ फ्री इण्डिया" में किया। स्वतंत्रता से पहले बीकानेर प्रथम रियासत थी जिसमे 1928 में ग्राम पंचायत अधिनियम लागू हुआ (जयपुर में 1938 में)
- सामुदायिक विकास कार्यक्रम 2 अक्टूबर 1952 को प्रारम्भ हुआ। सामुदायिक विकास कार्यक्रम जवाहर लाल नेहरू द्वारा शुरू किया गया।
- 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन 1993 के तहत स्थानीय शासन भारतीय परिसंघीय व्यवस्था में तीसरे स्तर की सरकार को सामने ला खड़ा किया।
- 'पंचायती राज' और 'नगरपालिका प्रणाली' को संवैधानिक अस्तित्व प्राप्त करने में एक लम्बा संघर्ष करना पड़ा।

- वर्ष 1956 में गठित बलवन्त राय मेहता समिति ने सर्वप्रथम पंचायती राज को स्थापित करने की सिफारिश की जिसे स्वीकार कर लिया गया साथ ही सभी राज्यों को इसे क्रियान्वित करने के लिए कहा गया।
- सर्वप्रथम राजस्थान के नागौर जिले में 2 अक्टूबर 1959 को पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने पंचायती राज की नींव रखी और उसी दिन इसे सम्पूर्ण राज्य (राजस्थान) में लागू कर दिया गया।
- किन्तु वाँछित सफलता प्राप्ति में कमी ने इस पर गम्भीरता से विचार करने के लिए मजबूर किया। अनेक समितियों का गठन किया गया, जिन्होंने अपनी सिफारिशों से पंचायती राज को मजबूती प्रदान की।

पंचायती राज व्यवस्था समितियाँ		
1.	बलवंत राय मेहता समिति	1957
2.	अशोक मेहता समिति	1977
3.	जी.वी.के. राव समिति	1985
4.	एल. एम. सिंघवी समिति	1986
5.	संथानम समिति	1962
6.	सादिक अली समिति	1964

- पंचायती राज का उद्घाटन :- 2 अक्टूबर 1959 बगदरी गाँव (नागौर) ।
- पचायतीराज का स्वर्ण जयन्ती समारोह 2 अक्टूबर 2009 नागौर।

- उद्घाटन कर्ता - प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ।
- पंचायतीराज के उद्घाटन के समय राजस्थान का मुख्यमंत्री - मोहन लाल सुखाडिया ।
- पंचायतीराज के उद्घाटन के समय राजस्थान के पंचायतीराज मंत्री - नाथू राम मिर्धा ।
- उस समय राजस्थान का मुख्य सचिव भगवतसिंह मेहता था ।

भारत में सर्वप्रथम पंचायतीराज का उद्घाटन राजस्थान में हुआ

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195171 , 8504091672

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 2

राज्य मानवाधिकार आयोग

- मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993 के तहत राज्य मानवाधिकार आयोग की स्थापना का प्रावधान किया गया था।
- यह आयोग केवल राज्य सूची तथा समवर्ती सूची के विषयों पर ही जाँच कर सकता है।
- यदि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग या अन्य कोई विधि क निकाय किसी मामले पर पहले से ही जाँच कर रहा हो तो राज्य मानवाधिकार आयोग हस्तक्षेप नही कर सकता है।
- वर्तमान में देश के 23 राज्यों में मानवाधिकार आयोग की स्थापना की जा चुकी है।

राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग

- राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग की स्थापना वर्ष 2000 में एक विधेयक पारित किया गया जो अगस्त , 2001 में लागू हुआ।

आयोग का संगठन

- आयोग में 1 अध्यक्ष तथा 4 सदस्य होते है।
- आयोग का अध्यक्ष व ही व्यक्ति होता है जो उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश रह चुका हो।
- आयोग का 1 सदस्य वह होगा जो उच्च न्यायालय का न्यायाधीश हो अथवा रह चुका हो।
- आयोग का 1 सदस्य वह होगा जो जिलान्यायाधीश हो अथवा रह चुका हो।
- आयोग के 2 सदस्य वे होंगे जो मानवाधिकारो के संदर्भ में विशेष जानकारी रखते हो।
- वर्ष 2006 में इस अधिनियम में संशोधन कर राज्य मानवाधिकार आयोग की सदस्य संख्या तथा सदस्यों की योग्यता में बदलाव किया गया।
- सदस्यों की संख्या चार सदस्यों से घटा कर 2 कर दी गई।
- सदस्यो की योग्यता में बदलाव किया गया । एक सदस्य भी पूर्व अनुसार उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश हो अथवा रह चुका हो।
- एक अन्य सदस्य वह होगा जो जिलान्यायाधीश हो अथवा उसे 7 वर्ष का न्यायिक अनुभव हो ।

- या वह व्यक्ति जो मानवाधिकार के विषय में अच्छी जानकारी रखता हो।

आयोग में सदस्यों की नियुक्ति -

- आयोग में सदस्यों की नियुक्ति राज्य पाल द्वारा छः सदस्ययी समिति की सिफारिश के आधार पर की जाती है।
- इस समिति का गठन निम्न प्रकार किया जाता है-
- समिति का पदेन अध्यक्ष राज्य का मुख्यमंत्री होता है।
- राज्य मंत्रिमंडल सदस्य (गृहमंत्री)।
- विधानसभा अध्यक्ष।
- विधानसभा में विपक्ष का नेता।
- विधानपरिषद सभापति।
- विधानपरिषद में विपक्ष का नेता।
- आयोग के सदस्यों को पद मुक्त करना
- राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्यों को पद मुक्त करने का अधिकार राष्ट्रपति को होता है , इस के लिए भी कई प्रावधान दिए हुए हैं। अतः पदमुक्ति के निम्न आधा रहो सकते हैं-
- सिद्ध कदाचार के आधार पर।
- सदस्य को दिवालिया घोषित कर दिया गया हो।
- सदस्य ने लाभकारी पद धारण कर लिया हो।
- वह मानसिक अथवा शारीरिक रूप से अक्षम हो।

आयोग सदस्यों व अध्यक्ष का कार्यकाल

- 5 वर्ष का कार्यकाल अथवा 70 वर्ष की उम्र जो भी पहले परी हो तक पद पर बने रह सकते हैं। लेकिन यदि 70 वर्ष की आयु पूर्ण नहीं हुई हो तो इस आयु तक पुन नियुक्त किए जा सकते हैं।
- कार्यकाल पूर्ण होने के बाद राज्य अथवा केंद्र सरकार के अधीन कोइ पद ग्रहण नहीं कर सकते हैं।

आयोग का कार्य

- मानवाधिकारो के संदर्भ में संवैधानिक व कानूनी प्रवधानो के क्रियान्वयन पर निगरानी रखना।
- गैर सरकारी संगठनों को प्रोत्साहित करना ताकि वे उचित रूप से क्षेत्र में कार्य कर सके।।
- मानवाधिकारो के सम्बन्ध में शोध करना एंव शोध को बढ़ावा देना।
- मानवाधिकारो से सम्बंधित शिकायतों को सुनना।
- मानवाधिकारो की जानकारी का प्रसार करना तथा जागरूकता बढ़ाना।
- आयोग गम्भीर विषयों पर स्वविवेक सेभी मामलों पर संज्ञा न लेता है।

आयोग की शक्तियाँ

- समन जारी करने की शक्ति ।
- शपथ पत्र अथवा हल फना मे पर लिखित गवाही लेने की शक्ति ।
- गवाही को रिकॉर्ड करने की शक्ति ।

देश की विभिन्न जे लोंका निरीक्षण

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोटस खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195711 , 8504091672

समय – सामायिक विषय (करंट अफेयर्स)

भारत और बांग्लादेश के बीच मैत्री सेतु" का उद्घाटन -

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने 9 मार्च, 2021 एक वीडियो कॉन्फ्रेन्स के माध्यम से भारत और बांग्लादेश के बीच और विशेष रूप से भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के साथ सम्पर्क को मज़बूत करने के लिए दोनों देशों के बीच मैत्री सेतु पुल का उद्घाटन किया।

7.9 किमी लम्बा यह मैत्री' सेतु ब्रिज फेनी नदी पर बनाया गया है, जो सबरूम (भारत) को रामगढ़ (बांग्लादेश) से जोड़ता है। इस पुल का निर्माण राष्ट्रीय राजमार्ग और आधारभूत विकास निगम लिमिटेड द्वारा लगभग ₹ 133 करोड़ की लागत से किया गया है।

बीमा अधिनियम 1938 में संसोधन को मंज़ूरी -

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बीमा क्षेत्र में अनुमेय प्रत्यक्ष विदेशी निवेश FDI की सीमा को बढ़ाकर 74% करने के लिए बीमा अधिनियम 1938 में संसोधन को मंज़ूरी दे दी है\

वर्तमान में भारतीय के साथ स्वामित्व व प्रबंधन नियंत्रण के साथ जीवन और सामान्य बीमा में FDI की सीमा 49 % है

भुवनेश्वर में भारत का पहला विश्व कौशल केंद्र -

ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने 5 मार्च 2021 को भुवनेश्वर के मानेस्वर

औद्योगिक क्षेत्र में ₹1342.2 करोड़ के निवेश से निर्मित भारत के पहले विश्व कौशल केंद्र का उद्घाटन किया इस केन्द्र को एशियाई विकास बैंक (ADB) और

ITE शिक्षा सेवा (ITEES), सिगापुर के ज्ञान साझेदार के रूप में विकसित किया गया है।

भारत में पहला 'ट्रांसजेण्डर डेस्क -

हैदराबाद (तेलंगाना) के गाचीबोवली पुलिस

स्टेशन में साइबराबाद पुलिस द्वारा 6 मार्च, 2021को भारत का पहला "ट्रांसजेण्डर कम्युनिटीडेस्क' शुरू किया गया। ट्रांसजेण्डर कम्युनिटी डेस्क' देश में अपनी तरह की पहली लिंग-समावेशी सामुदायिक

पुलिस पहल है, साथ ही ट्रांसजेण्डर समुदाय के लिए दुनिया का पहला सहायता केन्द्र है।

स्वतन्त्रता के 75 वर्ष पूरे होने के कार्यक्रम हेतु राष्ट्रीय समिति -

केन्द्र सरकार ने 5 मार्च, 2021 को भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में 259 सदस्यीय उच्च स्तरीय राष्ट्रीय समिति का गठन

किया। यह समिति राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय स्वतन्त्रता की 75वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य

में कार्यक्रमों के निर्माण के लिए नीति निर्देश और दिशा-निर्देश प्रदान करेगी।

प्रधानमंत्री द्वारा पुदुचेरी में विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन -

प्रधान नरेन्द्र मोदी ने 25 फरवरी 2021 को पुदुचेरी में विभिन्न विकास पहलों की आधार शिला रखी और उद्घाटन किया/

NH – 45 A के किमी सत्तानाथपुरम – विल्लुपुरम के नागपाटिटनम पैकेज की 4 लेनिंग कराइकल जिले को कवर करने वाला नागपाटिटनम परियोजना

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 823319571 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान समय सामयिकी (C.A.)

मार्च

1. भरतपुर की नीतिशा अग्रवाल (9 वर्ष) नॉनस्टॉप डांस में एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने वाली भारत की पहली बच्ची बनी है। उन्होंने एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में ग्रांड मास्टर का टाइटल प्राप्त किया।
2. 1 मार्च को राज्य कोविड-19 टीकाकरण कोविन 2.0 शुरू हो गया।

इस चरण में 60 वर्ष से अधिक और 45 से 60 वर्ष के बीच की आयु वाले गंभीर बीमारी के शिकार लोगों को टीका लगाया जा रहा है।

3. स्वच्छ मशहूर स्थलों की सूची -

जल शक्ति मंत्रालय के पेयजल और स्वच्छता विभाग ने स्वच्छ मशहूर स्थलों के चौथे चरण के तहत देश के 12 स्थानों को चुना है। इनमें राजस्थान के कुंभलगढ़, जैसलमेर किला और रामदेवरा को चुना गया है।

4. मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 24 फरवरी को बजट में अनाथ, उपेक्षित बच्चों के पुनर्वास के लिए गोरा धाय ग्रुप फोस्टर केयर संचालन की योजना रखी।
   - यह योजना पूरे 33 जिलों में शुरू की जाएं।
5. पाली के जैतारण तहसील के खेड़ा रामगढ़ गांव की मोनिका पटेल का इंडिया की वनडे और टी-20 टीम में चयन हुआ है।
6. ड्राइविंग लाइसेंस पर ऑर्गन डोनेशन की इच्छा अंकित करने वाला राजस्थान देश का पहला राज्य है।
7. राजस्थान में 5 अगस्त 2011 को फूड सेफ्टी एक्ट लागू हुआ। लागू होने के 10 साल में एक भी मिलावटखोर को सजा नहीं मिली है।
   - मौजूदा प्रावधान में मिलावटिओं को जमानत पर छोड़ने की व्यवस्था है।
   - हाल ही मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मिलावट और नकली दवाओं पर रोक लगाने के लिए क्रिमिनल लॉ (राजस्थान संशोधन) एक्ट 2021 को विधानसभा में पेश किया है।
   - राष्ट्रपति से मंजूरी मिलने के बाद यह कानून लागू हो जाएगा।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

8. 8 मार्च को राजस्थान और गुजरात के पूर्व राज्यपाल जस्टिस अंशुमान सिंह का निधन हो गया। अंशुमान सिंह ने जनवरी 1999 से 2003 तक राजस्थान के राज्यपाल के रूप में कार्य किया था।
9. राजस्थान में डेनमार्क के सहयोग से डेयरी क्षेत्र में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित किया जाएगा।
10. मानवता के लिए किए गए कार्यों के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी 1000 महिलाओं की सूची में पहला स्थान जोधपुर की पार्वती जांगिड़ सुतार ने हासिल किया है।
11. राजस्थान सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के अवसर पर धौलपुर की वसुंधरा चौहान को पुलिस उप निरीक्षक पद पर सीधी भर्ती देने का निर्णय किया है, जो पिछले दिनों अपनी जान की बाजी लगाकर बस में अपराधियों से बढ़ गई थी।
12. राजस्थान के विभिन्न तीर्थ और पर्यटन स्थलों के विकास के लिए केंद्र सरकार ने स्वदेश दर्शन और तीर्थ स्थान जीर्णोद्धार व आध्यात्मिक विरासत संवर्धन (प्रशाद) अभियान के तहत अब तक 256 करोड रुपए की सहायता उपलब्ध कराई है।
13. 4 मार्च को केंद्र सरकार ने 111 शहरों के लिए इज ऑफ लिविंग इंडेक्स जारी किया।

शीर्ष 50 रहने के लिए सबसे बेहतर शहरों में जोधपुर 21वें और जयपुर 23वें नंबर पर रहा।

14. बूंदी स्थित रामगढ़ विषधारी सेंचुरी राजस्थान का चौथा टाइगर रिजर्व बनेगा। इसे बाघों का जच्चा घर भी कहा जाता है।
15. चंबल नदी पर राजस्थान का सबसे लंबा पुल 1880 मीटर कोटा में बनाया जाएगा।
16. राजस्थान के माउंट आबू स्थित प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुखिया राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी का 93 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

साहित्य अकादमी नई दिल्ली की ओर से प्रतिवर्ष दिया जाने वाला राजस्थानी बाल साहित्य पुरस्कार इस बार श्री गंगानगर के साहित्यकार डॉ मंगल बादल को देने की घोषणा

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको राजस्थान फायरमैन – 2021 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों

तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी राजस्थान फायरमैन – 2021 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 823319571 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

01414045784

contact@infusionnotes.com

http://www.infusionnotes.com/

AVAILABLE ON/